International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2024; 6(2): 01-04
Received: 10-11-2023
Accepted: 15-12-2023

अरुण कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. अनिल कुमार शुक्ल
प्राचार्य, माँ अष्टभुजा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मऊगंज जिला, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अरुण कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य, पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन

अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. अनिल कुमार शुक्ल

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य, पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 06–06 विद्यालय अर्थात कुल 54 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 12 छात्राएं सामान्य वर्ग, 06 छात्राएं पिछड़ा वर्ग और 06 छात्राएं अनुसूचित जाति–जनजाति वर्ग के अर्थात कुल 1296 छात्राओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि महिला सशक्तिकरण के आयामों – शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैयक्तिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी पर सांख्यिकी आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुए कि शैक्षिक आयाम पर जागरूकता सामान्य वर्ग और अनुसूचित जाति–जनजाति वर्ग के छात्राओं में अन्तर पाया गया है और इसी प्रकार सामान्य वर्ग और पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में भी सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है जबकि पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति–जनजाति वर्ग के छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

कुटशब्दः रीवा जिला, उच्चतर माध्यमिक स्तर, छात्राएं, महिला सशक्तिकरण के आयाम।

1. प्रस्तावना
किसी भी देश की सभ्यता एवं संस्कृति का मापदंड महिलाएँ मानी जाती हैं, वहाँ की सफलता नारी के सर्वांगीण विकास में निहित है। पारिवारिक तथा सामाजिक विकास का मूल स्रोत नारी है। सच तो यह है कि नारी–विहीन समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। महिलाएँ परम्परा, संस्कृति तथा जीवन मूल्यों की अति जीवन्त वाहक होती है।

महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य है महिलाओं को उनके सर्वांगीण विकास के अवसर उपलब्ध कराना ताकि वे समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। सशक्तीकरण वास्तव में महिला पुरूष समानता के विचार को दृढ़ता प्रदान करता है, सामाजिक, सांस्कृतिक, तथा साम्प्रदायिक सौहार्द में वृद्धि होती है। महिला सशक्तीकरण का अर्थ है समस्त बल का केन्द्रीकरण। अर्थात् महिला शक्ति का विकास। महिलाओं द्वारा स्वावलम्बनपूर्वक अपनी शक्तियों का राष्ट्र व समाज हितार्थ–पूर्णरूपेण उपयोग करना।

सशक्तीकरण का शाब्दिक अर्थ है स्वतः स्वयं को अभिव्यक्त करने की क्षमता। यह सामान्यतः समाज में भागीदारी की प्रक्रिया है जो घर से प्रारंभ होकर सम्पूर्ण समाज में घटित होती है। यह व्यक्ति को जागरूक करने, अधिक समझदारी हेतु क्षमता उत्पन्न करने, एवं बड़े से बड़े निर्णय को आत्म विश्वास के साथ लेने की प्रक्रिया है यह सामाजिक राजनैतिक आर्थिक संवधों की शक्ति को दृढ़ता देती है। जब हम महिलाओं को स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जीने की स्वतंत्रता देते हैं तो हम उन्हें महिलाओं के व्यक्तिगत मामलों में निर्णय लेने का अधिकार देते हैं। महिलाओं के निजी व्यवसायिक मामलों में दखलअंदाजी न करें। इससे महिलाओं को सामाजिक, राजनीतिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक विकास और लैंगिक समानता में अवसर, अधिकार और स्वतंत्रता मिलती है। जिससे महिलाएं अपने जीवन के अवसरों और अधिकारों पर स्वतंत्र निर्णय लेकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। महिलाओं पर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और रीति–रिवाज या अन्य पूर्वाग्रह उनके लिए एक स्वतंत्र वातावरण बनाते हैं, जो महिलाओं के जीवन विकास के लिए बेहद जरूरी है। वह समाज के सभी पहलुओं में स्वतंत्र रूप से भाग लेती है। अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग करता है। महिलाएं खुद को बौद्धिक, कुशलता, सक्षमता, निर्णायक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाती हैं।

जब महिलाओं को ऐसे अधिकार मिलेंगे तो महिलाएं अपना सर्वांगीण विकास कर सकती हैं। महिलाओं के साथ कोई लैंगिक भेदभाव नहीं है, बल्कि उन्हें हर कदम पर पुरुषों के समान अधिकार, अवसर और स्वतंत्रता प्राप्त है।

शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अपनी नेतृत्व क्षमता संचार और कौशल को निखारती हैं। साथ ही वित्तीय प्रबंधन, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से महिलाएं पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने में सक्षम हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता

आज भारत स्वयं को एक महाशक्ति के रूप में सिद्ध कर रहा है महिलाओं को जागरूक करना आवश्यक है। महिला चेतना सम्पूर्ण विकास की धुरी है। इस हेतु शिक्षा श्रेष्ठ साधन है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को उसके अधिकार, कर्तव्य का ज्ञान कराती है, बुद्धि को परिष्कृत करती है, निर्णय क्षमता विकसित करती है, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करती है। प्रस्तावित शोध में "रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य, पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया गया है। चूंकि उच्चतर माध्यमिक स्तर को शिक्षा प्रक्रिया में मजबूत तने के रुप में स्वीकार किया गया है अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य, पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना समीचीन प्रतीत होता है।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सषक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं। जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

5.1 समष्टि व प्रतिदर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं का अध्ययन किया जाना व्यवहारिक दृष्टिकोण से संभव नहीं है। सीमित समय और सीमित व्यय में अधिक प्रयुक्त, त्रुटिहीन और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए न्यादर्श का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 06–06 विद्यालय अर्थात कुल 54 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा यह सभी संस्थान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हों।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य, पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 12 छात्राएं सामान्य वर्ग, 06 छात्राएं पिछड़ा वर्ग और 06 छात्राएं अनुसूचित जाति–जनजाति वर्ग के अर्थात जिले से 648 छात्राएं सामान्य वर्ग के, 324 छात्राएं पिछड़ा वर्ग और 324 छात्राएं अनुसूचित जाति–जनजाति के कुल 1296 छात्राओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोध समस्या में उपकरणों का चुनाव शोध की परिकल्पना की प्रकृति पर निर्भर करती है। प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े एकत्रित करने के लिए उपयुक्त होता है। आवश्यकता एवं सुविधा की दृष्टि से शुद्ध, वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन के लिए महिला सशक्तिकरण मापनी शोधकर्ता ने अपने आदरणीय निर्देशक महोदय के निर्देशन से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी) नई दिल्ली के नियमों को दृष्टिगत रखते हुए स्वयं से निर्मित की है। शोधकर्ता ने महिला सशक्तिकरण के समस्त पक्षों को ध्यान में रखते हुए विकल्पों का निर्माण किया। तत्पश्चात् निर्देशक महोदय के परामर्शानुसार तथा वरिष्ठ शोध विशेषज्ञों से सुधारात्मक सुझाव

लिए एवं उनसे निर्देश प्राप्त कर मापनी में वांछित परिवर्तन करके प्रमापीकृत किया गया। यह मापनी केवल इस उद्देश्य से निर्मित की गई है जिससे कि विभिन्न शैक्षिक स्तर की महिलाओं के सशक्तिकरण के स्तर का पता लगाया जा सकेगा।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कपिल, एच.के. (1996)[2], राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010)[3], पाठक, पी.डी. (1998)[4], देशपांडे, एस., और सेठी, एस. (2010)[5], पिल्लई जे.के. (1995)[6], सागर, कविता एवं कुमार, डॉ. बिनय (2022)[7] ने शोध विधि एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शोध क्षेत्र का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1 : शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	सामान्य वर्ग	648	58.64	17.04	2.58	1.96	4.901
2.	अनुसूचित जाति–जनजाति	324	52.44	19.34			

df = 970

सारणी एवं आरेख क्रमांक 1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.64 है तथा मानक विचलन 17.04 है। अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सषक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थकता का औसत उपलब्धि 52.44 है तथा मानक विचलन 19. 34 है। इनका *df* = 970 है। गणना से प्राप्त 't' का मान 4.901 है, जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। ये प्रदत्त स्पष्ट करते हैं कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर है। यह इस तथ्य का द्योतक है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के पाँच आयामों – शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैयक्तिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी आयामों के जागरूकता पर दोनों वर्ग के छात्राओं में अंतर पाया गया है। अतः निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी 2 : शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	सामान्य वर्ग	648	58.64	17.04	2.58	1.96	3.696
2.	पिछड़ा वर्ग	324	53.95	19.41			

df = 970

सारणी क्रमांक 2 एवं आरेख क्र. 1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.64 है तथा मानक विचलन 17.04 है। पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थकता का औसत उपलब्धि 53.95 है तथा मानक विचलन 19.41 है। इनका *df* = 970 है। गणना से प्राप्त 't' का मान 3.696 है, जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। ये प्रदत्त स्पष्ट करते हैं कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर है। यह इस तथ्य का द्योतक है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों – शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैयक्तिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता में दोनों वर्ग के छात्राओं में अंतर पाया गया है। अतः निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी 3: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति–जनजाति व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	अनुसूचित जाति–जनजाति वर्ग	324	52.44	19.34	2.58	1.96	0.994
2.	पिछड़ा वर्ग	324	53.95	19.41			

df = 646

सारणी क्रमांक 3 एवं आरेख क्र. 1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि षोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति–जनजाति वर्ग के छात्राओं में महिला सषक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में में सार्थकता का औसत उपलब्धि 52.44 है तथा मानक विचलन 19.34 है। पिछड़ा

वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थकता का औसत उपलब्धि 53.95 है तथा मानक विचलन 19.41 है। इनका *df* = 646 है। गणना से प्राप्त 't' का मान 0.994 है, जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से कम है। ये प्रदत्त स्पष्ट करते हैं कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति–जनजाति व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के पाँच आयामों – शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैयक्तिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता में दोनों वर्ग के छात्राओं में अंतर नहीं पाया गया है। अतः निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत होती है।

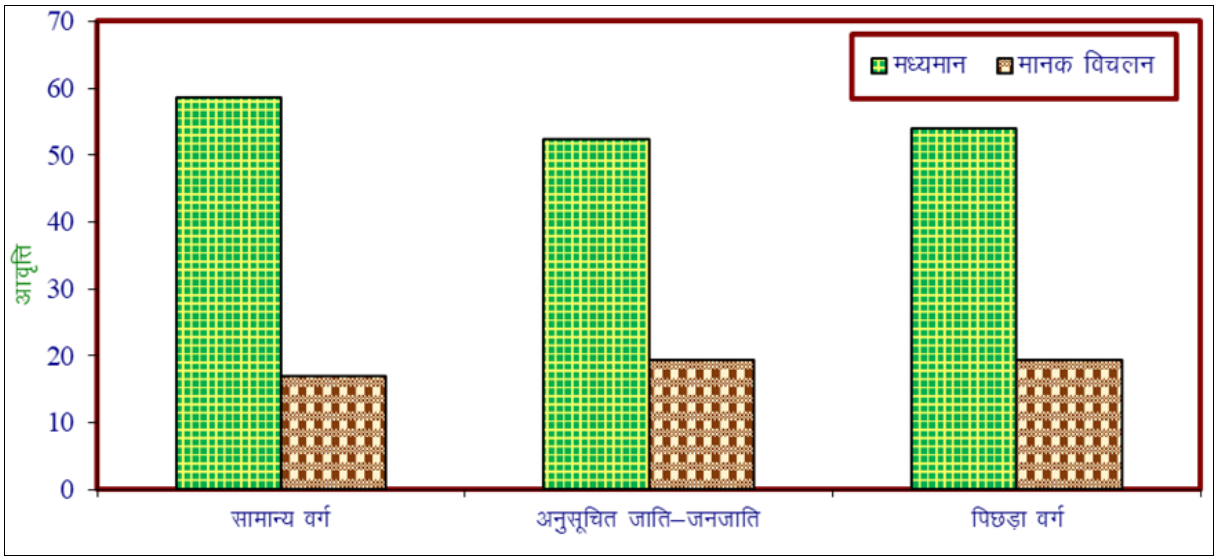

आरेख 1: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य, अनुसूचित जाति–जनजाति व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता का आरेखीय निरूपण

11. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व अनुसूचित जाति–जनजाति के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर है। इन पदों पर सामान्य छात्राओं का अभिमत उक्त आयाम की जागरुकता पर अनुसूचित जाति–जनजाति की छात्राओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक पाया गया है।

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर है। इन पदों पर सामान्य छात्राओं का अभिमत उक्त आयाम की जागरुकता पर पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा अधिक संतोषजनक पाया गया है।

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति–जनजाति व पिछड़ा वर्ग के छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के पाँच आयामों – शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैयक्तिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता में दोनों वर्ग के छात्राओं में अंतर नहीं पाया गया है।

12. सन्दर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010) : अनुसंधान परिचय. आगरा : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल.
4. पाठक, पी.डी. (1998) : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
5. देशपांडे, एस., और सेठी, एस. (2010) : भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की भूमिका और स्थिति, इंटरनेशनल रेफर्ड रिसर्च जर्नल, 1(17), 10–12.
6. पिल्लई जे.के. (1995) : "महिला और सशक्तीकरण" ज्ञान प्रकाशक हाउस, नई दिल्ली।
7. सागर, कविता एवं कुमार, डॉ. बिनय (2022) : "महिला सशक्तिकरण के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की धारणा का अध्ययन", Multidisciplinary Academic Research, 19(1); 264 - 269 (6).